परिचय

बाइबल के 13 मुख्य वचन

बाइबल इतनी बड़ी और जटिल पुस्तक लगती है कि पाठक आम तौर पर उलझन में रहते हैं कि इसके संदेश को कैसे समझें। क्या जो कुछ हम उत्पत्ति की पुस्तक में पढ़ते हैं उसका उससे कोई सम्बन्ध है जो हम इफिसियों की पुस्तक में पढ़ते हैं? यदि हां तो वह क्या है? स्पष्टतया यह पता लगाने का पक्का और पूरा तरीका पूरी बाइबल को शुरू से लेकर आखिर तक अध्ययन करना है। परन्तु अधिकतर लोग इसका अध्ययन करने से पहले ही छोड़ देते हैं।

यह शृंखला एक और तरीका बताती है। अगले पाठ पूरी बाइबल को हमें समझाने और बाइबल की मुख्य अवधारणाओं के मुख्य विषयों का परिचय देते हुए सहायता कर सकते हैं। क्या हम सम्पूर्ण बाइबल के अध्ययन का स्थान इन वचनों के अध्ययन को दे सकते हैं? यकीनन नहीं। ऐसा करना अपने आप को परमेश्वर के वचन के धन और समृद्धि से वंचित करना होगा। यदि किसी को थोड़ा सा पहले आभास हो कि पूरा संदेश किस ओर जा रहा है और यह किस विषय में है तो वह उसे पूरा पढ़ेगा।

ये तेरह वचन क्यों चुने गए। इस अध्ययन के लिए प्रत्येक वचन का चयन इन में से एक या दोनों मानकों को पूरा करता है: (1) यह एक घटना (जैसे सृष्टि की, निर्गमन या क्रूस पर चढ़ाए जाने की) का वर्णन करती है जो इस्राएली जाति या आरम्भिक कलीसिया के विकास में बड़े ऐतिहासिक महत्व की है। (2) यह मुख्य विचार (जैसे नई वाचा, मसीहा, या अनुग्रह से उद्धार) को दिखाता है जो बाइबल को पूरा समझने में हमारे लिए निर्णायक है। इनमें से अधिकतर दोनों वचनों को पूरा करते हैं।

स्पष्टतया यह प्रस्ताव देना कि तेरह वचनों की समीक्षा बाइबल के एक सिरे से दूसरे सिरे तक की गई है हमें पूर्ण संदेश के महत्व की कोई भी बात बताता है जो आरम्भ में हमें स्पष्ट होनी चाहिए। एक तो यह है कि बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया वचन है। कलीसिया के लिए आत्मिक कैनन में इसके लम्बे विकास और संग्रह में, यह एक ईश्वरीय योजना के अनुसार, उन कुछ सच्चाइयों को बताने के लिए बनी है जो परमेश्वर से, जिसने हमें बनाया है सम्बन्धित होने के लिए हमारी योग्यता के लिए निर्णायक हैं। एक दूसरी मान्यता यह है कि बाइबल एक ही संदेश को दिखाती है। अपने सभी ऐतिहासिक मोड़ों और उलझनों के साथ यह संदेश हमारे ऊपर उस परमेश्वर को प्रगट करता है जो अपने कार्य की योजना बनाता है और फिर उन लोगों के अनन्त लाभ के लिए अपनी योजना पर काम करता है जो उससे प्रेम रखते हैं।

नीचे बाइबल के वे वचन दिए गए हैं जो मैंने अपनी सूची में शामिल करने के लिए चुने हैं:

उत्पत्ति 1–3: ''परमेश्वर, मनुष्य जाति व पाप''
उत्पत्ति 12 और 15: ''अब्राहम–उद्धार का आरम्भ''
निर्गमन 3 और 14: ''परमेश्वर एक लोग को छुड़ाता है''
निर्गमन 20: ''वाचा व आज्ञा''

2 शमूएल 7: ''दाऊद का पुत्र/परमेश्वर का पुत्र''
यशायाह 53: ''दुखी दास''
यिर्मयाह 31: ''एक नई वाचा''
मत्ती 1: ''दाऊद की सन्तान/अब्राहम की सन्तान''
यूहन्ना 1:1–18: ''वचन देहधारी हुआ''
यूहन्ना 19 और 20: ''क्रूस पर चढ़ाया गया व जी उठा''
प्रेरितों 2: ''पिन्तेकुस्त व आगे''
इफिसियों 2:1–10: ''अनुग्रह से उद्धार''
प्रकाशितवाक्य 21 और 22: ''अन्तिम भविष्य''

मेरी प्रार्थना है कि आपको ये पाठ परमेश्वर के प्रेम की अद्‌भुत कहानी को बताने में एक सहायक मार्गदर्शक लगे। अपने परमेश्वर के बारे में और छुटकारे की उस बड़ी योजना के बारे में जानना जिसे उसने हमारे लिए दिया है निश्चय ही संसार की सबसे महत्वपूर्ण बाइबल है।